प्रवासी मंच में मोहन राणा का काव्य पाठ

नई दिल्ली। साहित्य अकादेमी ने सोमवार को अपने प्रतिष्ठित कार्यक्रम प्रवासी मंच के अंतर्गत इंग्लैंड से पधारे कवि मोहन राणा के काव्य पाठ का आयोजन किया। दिल्ली में जन्में मोहन राणा अभी लंदन में रहते हैं और उनके दस कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। पिछले दिनों उनका काव्य संग्रह पंक्तियों के बीच प्रकाशित हुआ है। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने जहां उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बताया वहीं अपनी अनेक कविताओं का पाठ भी किया। उन्होंने अपनी रचना-प्रक्रिया पर बोलते हुए कहा कि कविता और शब्द-संवेदना के बीच कवि एक कार्बन कॉपी की तरह है। कविता दो बार अनूदित होती है, पहली बार जब लिखी जाती है और दूसरी बार जब उसे लिखा या पढ़ा जाता है। आगे उन्होंने कहा कि मैं कविता की खिड़कियां बनाता हूं, जो हमेशा खुली रहती है। उनके द्वारा सुनाई गई कुछ कविताओं के शीर्षक थे,पारगमन, यह जगह काफी है, एक सामान्य दिसंबर का दिन, चार चिड़ी तीन इक्के और एक जोकर, पानी का रंग, छतनार चीड़ की छाया में, होगा एक और शब्द तथा अर्थ शब्दों में नहीं तुम्हारें भीतर है। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित श्रोताओं ने उनकी कविताओं को लेकर कई सवाल जवाब किए और संक्षिप्त टिप्पणियां भी प्रस्तुत कीं।